E-301
1

UNIT-5

समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

समावेशी शिक्षक के गुण

शिक्षा का तात्पर्य बालक के सर्वांगीण विकास से है जिसके अन्तर्गत अध्यापक का कार्य न केवल बालक का मानसिक विकास करना है। बल्कि उसके शारीरिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास में भी योगदान करना है। जैसा कि अध्यापक को राष्ट्र निर्माता, नागरिकों का निर्माणकर्ता, शिक्षा प्रक्रिया की आधारशिला, समाज का पथ-प्रदर्शक आदि सब कुछ कहा जाता है। इस प्रकार एक समावेशी शिक्षक में सामान्यतः निम्न गुणों की अपेक्षा की जाती है—

- बालकों को समझने की योग्यता एवं कुशलता।
- स्वयं की शैक्षिक एवं शिक्षण योग्यताएँ।
- बालकों के साथ कार्य करने तथा समायोजन की क्षमता।
- कार्य करने की इच्छा-शक्ति।
- सहयोग, सद्भावना, निष्पक्षता तथा नेतृत्व की क्षमता।

प्रभावशाली शिक्षण के लिए तथा छात्रों की मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक स्तर की जानकारी अध्यापक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु, शिक्षण-विधियाँ, सहायक सामग्री आदि का उचित ढंग से उपयोग करना निष्ठावान तथा योग्य अध्यापक पर ही निर्भर करता है। अध्यापक अपनी योग्यता, अनुभव तथा सूझ-बूझ के आधार पर विषय को अधिक रुचिकर तथा उपयोगी बना सकता है। अध्यापक में कुछ ऐसे गुण एवं विशेषताएँ होती हैं जिनके द्वारा वह बालकों में सोचने-समझने, विश्लेषण, संश्लेषण, तर्क-वितर्क, आदि मानसिक शक्तियों का विकास कर सकता है।

Scanned with CamScanner

classmate
Date :
Page :

(2)

समावेशी शिक्षक के व्यक्तिगत गुण

1 विषय में रुचि →

अध्यापक को अपने विषय की विषय-वस्तु पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को सामाजिक अध्ययन में रुचि रखना अति आवश्यक है। जब तक अध्यापक अपने विषय में रुचि नहीं लेगा तब तक वह कक्षा में उत्साह, लगन तथा परिश्रम से पढ़ाने में असमर्थ रहेगा। विद्यालयी पाठ्यक्रम में विषय का उचित स्थान बनाये रखने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक विषय के प्रति लगाव रखे तथा अपनी बनाये रखे।

2 व्यक्तित्व →

डब्ल्यू. एम. रायबर्न के अनुसार, "शिक्षा संबंधी सफलता अध्यापक पर ही निर्भर होती है, उसके ज्ञान और योग्यता पर विशेषकर उसके व्यक्तित्व और जीवन संबंधी गुणों तथा सदाचार पर।"

i) अच्छे शरीर में अच्छे मन का विकास →

यह एक पुरानी कहावत है, अध्यापक को शारीरिक तौर पर स्वस्थ होना चाहिये। इस प्रकार वह अपने उत्तरदायित्व अच्छी प्रकार निभा सकता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

③

ii) व्यक्तिगत रूप →

चेहरा मन का चिन्ह होता है। अध्यापक की व्यक्तिगत आकृति अच्छी होगी तो बच्चे उससे प्रभावित होंगे। गंदा अध्यापक तथा ठीक प्रकार के कपड़े न पहनने वाला अध्यापक आधुनिक युग में बच्चों को प्रभावित नहीं कर सकता, विशेषकर छोटी आयु के बच्चे गंदे अध्यापक की योग्यता द्वारा अधिक प्रभावित नहीं हो सकते।

iii) साधारण सूझ-बूझ से ऊपर →

साधारण रूप से अच्छी योग्यता वाला अध्यापक ही अपने साधनों का ठीक प्रयोग कर सकता है। उसको वास्तविक दृष्टिकोण और शीघ्र निर्णय देने वाला होना चाहिये।

UNITED SECULAR SOCIETY

iv) अच्छी मानसिक दशा →

एक अध्यापक का जीवन संतुलित विचारों वाला होना चाहिये। उसके कर्तव्य उससे सशक्त और सक्रिय जीवन की माँग करते हैं। अध्यापक को हर समय कठिन परिस्थितियों का सामना करना चाहिये। कठिनाइयों वाले अध्यापक विद्यार्थियों के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न कर देते हैं। ऐसे अध्यापक वे हैं जिनके निजी जीवन में कठिनाइयाँ हैं। यह बातें विद्यार्थियों तथा अन्य स्टाफ के सदस्यों के साथ उनका व्यवहार मूर्खतापूर्ण बना देती हैं। अतः एक निराश हुआ तथा तंग आया मनुष्य कभी अच्छा अध्यापक नहीं बन सकता। अध्यापक को संतोषजनक जीवन बिताना चाहिए।

Scanned with CamScanner

classmate
Date :
Page :

v) अच्छा आचरण →

अध्यापक के आचरण की बिल्कुल आलोचना नहीं होना चाहिये। उसको अपने संवेगों पर और विशेषकर क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिये। ~~जिन चलने के लिए वह~~ विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करते समय उसमें साहस तथा संतोष होना चाहिये। उसको उन सिद्धांतों पर आचरण करके दिखाना चाहिये जिन पर चलने के लिए वह दूसरों को उपदेश देता है। उसका स्वभाव न्यायप्रिय, गलतफहमियों से दूर और निष्पक्षता पर आधारित होना चाहिये। शराब पीना, तम्बाकू पीना, झूठ बोलना, गालियाँ देना आदि कुछ ऐसे दोष हैं जिनसे समाज अध्यापकों को मुक्त होने की आशा करता है।

vi) विविध रुचियाँ →

इसके साथ ही अध्यापक की रुचियाँ वि विविध होनी चाहियें। अपने विषय के अतिरिक्त विशेषकर पाठ्य सहगामी क्रियाओं तथा खेलकूद में भी अध्यापक को अपना योगदान प्रदान करना चाहिए।

vii) दृढ़ संकल्प →

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

classmate
Date :
Page :

viii) दृढ़ संकल्प →

शिक्षक को राष्ट्र निर्माता माना जाता है, इसलिए उससे अपेक्षा की जाती है कि उसमें दृढ़ संकल्प की भावना होनी चाहिये। अध्यापक को सत्यप्रेमी, सहिष्णु तथा ईमानदार भी होना चाहिये। यदि अध्यापक, सच्चरित्र नहीं है तो वह अपने छात्रों तथा समुदाय के नागरिकों का उपयुक्त ढंग से पथ-प्रदर्शन नहीं कर सकता। जिस अध्यापक में जितनी अधिक दृढ़ संकल्प की योग्यता या विशेषता होगी, वह उतना ही अधिक सफल शिक्षक हो सकता है। अतः शिक्षक को दृढ़ संकल्प के साथ ही अपना कार्य करना चाहिये।

3 विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण →

विषय के प्रति अध्यापक को सकारात्मक तथा रचनात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिये क्योंकि अध्यापक के स्वयं के दृष्टिकोण का सीधा प्रभाव बालकों की सीखने की प्रक्रिया तथा गति पर पड़ता है।

4 साह

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

4 साधन संपन्नता →

जिन अध्यापकों में साधन संपन्नता की विशेषता होता है, वे आवश्यकतानुसार यथासम्भव विभिन्न साधनों की व्यवस्था कर लेते हैं तथा अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली एवं सफल बना सकते हैं। अध्यापक में सृजनात्मकता तथा कल्पना-शक्ति होनी चाहिये तथा यह उनके क्रिया-कलापों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित भी होनी चाहिये।

5 आत्मविश्वास एवं धैर्यवान →

अध्यापक में आत्मविश्वास का होना अति आवश्यक है। बालकों को विषय-वस्तु का विश्लेषण तथा स्पष्टीकरण करने के लिए अध्यापक में धैर्य तथा आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में अध्यापकों का व्यवहार चिड़-चिड़ा हो जाता है जिससे वे बच्चों पर खीज उठते हैं और अपने शिक्षण में सफल नहीं हो पाते। इस प्रकार एक अच्छे अध्यापक में धैर्य, सहनशीलता तथा आत्मविश्वास का होना अनिवार्य है, तभी छात्रों की समस्याओं का समाधान सुगमता से कर सकता है।

6

UNITED REGULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

6 उत्तम स्वास्थ्य→

अध्यापक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा चरित्रवान होना चाहिए। सामान्यतः यह कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। यदि अध्यापक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है तो वह शिक्षण कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर सकता क्योंकि शक्ति एवं स्फूर्ति शिक्षण कार्य में उत्साह लाती है। अध्यापक को केवल शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक नहीं है, बल्कि उसमें चेतना का होना भी अति आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है।

समावेशी शिक्षक के व्यावसायिक गुण

1 विषय-वस्तु का ज्ञान→

अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि उसे अपने विषय के संबंध में पूर्ण जानकारी हो। यदि उसका विषय संबंधी ज्ञान अधूरा या छिछला होगा तो वह अपने छात्रों का विश्वासपात्र नहीं हो सकेगा। जब तक अध्यापक का विषय-वस्तु पर पूर्ण अधिकार नहीं होगा तब तक वह धैर्य तथा आत्मविश्वास के साथ शिक्षण नहीं कर पायेगा।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

2 विषय वस्तु के प्रस्तुतिकरण का ढंग -

कक्षा में जो जो भी प्रकरण, संप्रत्यय, सूत्र या ~~नियम~~ नियम, छात्रों को पढ़ाना है उसे तर्क-वितर्क, विश्लेषण के साथ ही अध्यापक को प्रस्तुत करना चाहिए। समस्या के प्रत्येक पद को तार्किक तथा क्रमबद्ध ढंग से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। अतः अध्यापक को बालकों की प्रकृति को समझने तथा शिक्षण करने के ढंग से भली-भाँति परिचित होना चाहिए।

3 व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान -

प्रत्येक छात्र की पढ़ने, लिखने, समझने अथवा कार्य करने की गति तथा क्षमता अलग-अलग होती है। इसलिए एक अच्छे अध्यापक के लिए छात्रों की इन व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझना अति आवश्यक हो जाता है। जब तक अध्यापक छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था नहीं करता तब तक वह एक सफल अध्यापक नहीं हो पाता।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

E-302

मानव अधिकार और महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है, कि इससे महिलाओं में उस शक्ति का प्रवाह होता है, जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण है। आज के आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रंथों में नारी के महत्व को यहाँ तक बताया गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते करते हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है, ताकि उन्हें रोजगार, शिक्षा, आर्थिक विकास में बराबरी के अवसर मिल सकें। जिससे वह सामाजिक स्वतंत्रता तथा तरक्की प्राप्त कर सकें। यह वह तरीका है, जिसके द्वारा महिलाएँ भी पुरुषों की तरह अपनी हर आकांक्षाओं को पूरा कर सकें। भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि प्राचीन समय से भारत में लैंगिक असमानता थी और पुरुष प्रधान समाज था। प्राचीन भारतीय समाज दूसरी भेदभाव पूर्ण दस्तूरों के साथ सती प्रथा, नगर वधु व्यवस्था, दहेज प्रथा, यौन हिंसा, बाल मजदूरी, बाल विवाह आदि परंपरा थी। इनमें से कई सारी प्रथाएँ आज भी समाज उपस्थित हैं। भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएँ चलाई जा रही हैं। महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय तथा भारत

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना, महिला हेल्पलाइन योजना, उज्ज्वला योजना, महिला शक्ति केंद्र जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं। जिस तरह से भारत सबसे तेज आर्थिक विकास प्राप्त करने वाले देशों में शामिल हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। हमारे हमें महिला सशक्तिकरण के इस कार्य को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि इसी के द्वारा देश में लैंगिक समानता और आर्थिक विकास को प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय समाज में व वास्तव में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो कि पितृसत्तात्मक और पुरुष प्रधान युक्त व्यवस्था है। जरूरत है कि हम संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों को भी बदलने का प्रयास करें।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

मानव अधिकार

1946 में

मानवाधिकार वे अधिकार हैं जो प्रत्येक मानव को मानव होने के नाते सामाजिक वातावरण में रहते हुए जीवन में विकास एवं उत्कर्ष के लिए प्राप्त होते हैं। मानवाधिकारों का उपयोग कर मानव अपनी शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक तथा अन्य उपयोगी आवश्यकताओं की निर्बाध रूप से पूर्ति कर व्यक्तित्व का ~~समग्र~~ सामग्र विकास करने में समर्थ हो पाता है। संक्षेप में मानवोन्नयन एवं उत्कर्ष के लिए जो सुविधाएँ और नियम ईश्वर, समाज व राज्य की ओर से प्राप्त हैं, उन्हें अधिकार कहते हैं।

जे॰ ई॰ एस॰ फॉसेट के अनुसार, "मानव अधिकार कभी कभी मौलिक अधिकार या मूल अधिकार या प्राकृतिक अधिकारों के नाम से पुकारे जाते हैं।" मौलिक अधिकार वे अधिकार हैं जिनको किसी व्यवस्थापिका द्वारा छीना नहीं जा सकता है। प्राकृतिक अधिकार मनुष्य तथा नारी दोनों से संबंधित हैं, साथ ही वे उनके स्वभाव के अनुकूल होते हैं।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

classmate
Date :
Page :

UNIT-4

पाठ्यक्रम तथा विकास

माध्यमिक शिक्षा आयोग

पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से ही नहीं है, जो विद्यालय में परंपरागत ढंग से पढ़ाए जाते हैं, बल्कि इसमें बच्चों के वे सभी अनुभव निहित होते हैं, जिन्हें वे विद्यालय, कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, कार्यशाला तथा खेल के मैदान में प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम में वे सभी अनुभव भी सम्मिलित हैं, जो बच्चों को अध्यापकों तथा अपने साथियों के औपचारिक एवं पारस्परिक संबंधों से प्राप्त होते हैं। इस प्रकार विद्यालय का संपूर्ण जीवन ही पाठ्यक्रम बन जाता है, जिससे बच्चों के व्यक्तित्व के सभी पक्ष प्रभावित हो सकते हैं तथा यह उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के संतुलित विकास में सहायक होता है। पाइन महोदय ने ठीक ही कहा है कि— "पाठ्यक्रम में वे सभी स्थितियाँ आती हैं, जिनका चयन शिक्षालय चेतन रूप में शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के विकास हेतु करना है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यालय के अंदर या बाहर जो कुछ भी क्रियाएँ की जाती हैं, वे सभी पाठ्यक्रम में सम्मिलित होती हैं। पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा छात्रों के व्यवहार, ज्ञान, कौशल आदि में वांछित परिवर्तन करके शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयास किए जाते हैं

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

classmate
Date :
Page :

पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ

1 हेनरी, जे० ओटो के अनुसार, "पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा हम बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के योग्य बनाने की आशा करते हैं।"

2 एलन के अनुसार, "पाठ्यक्रम पर्यावरण में होने वाली क्रियाओं का योग है।"

पाठ्यक्रम का निर्माण के सिद्धांत

पाठ्यक्रम का निर्माण करना एक जटिल कार्य है। विषयों के उचित प्रकरणों का चयन एवं गठन एक कठिन कार्य है। ज्ञान के विस्फोट तथा निश्चित अवधि में पढ़ाने की सीमा ने के पाठ्यक्रम के निर्माण को और भी अधिक जटिल बन दिया। बैंजामिन फ्रैंकलिन के कथनानुसार, "यह अच्छा होगा यदि उन्हें वह सब कुछ सिखाया जाये जो उपयोगी एवं अलंकारिक है, परंतु कला व्यापक और समय थोड़ा है। अतः इस बात का सुझाव दिया जाता है, कि उन्हें वे चीजें सिखायी जाएँ जो अत्यधिक उपयोगी एवं अत्यधिक अलंकारिक हो।"

UNITED SECULAR SOCIETY

बैंजामिन के इस कथन से स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में उन बातों का चयन होना चाहिये जो उपयोगी भी हों और अलंकारिक भी। ज्ञान के अथाह सागर में से परिवर्तित होती हुई स्थितियों के अनुकूल ऐसी सामग्री का चुनाव एवं गठन निश्चित रूप से जटिल एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कार्य को पूर्ण करने में निम्नलिखित सिद्धांतों के पालन से पर्याप्त सहायता प्राप्त हो सकती है—

Scanned with CamScanner

classmate
Date:
Page:

1. उपयोगिता का सिद्धांत :-

पाठ्यक्रम निर्माण का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि उसमें जिन विषयों को स्थान दिया जाए, वे बालक के भावी जीवन के लिए उपयोगी होना चाहिए। इस संबंध में नन ने लिखा है, "साधारण मनुष्य सामान्यत: यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिए कुछ व्यर्थ की बातें सीखें, परन्तु समग्र रूप में वह चाहता है कि उनको वे बातें ही सिखाई जाए जो भावी जीवन में उनके लिए उपयोगी हो।"

2 सामुदायिक जीवन से संबंध का सिद्धांत :-

पाठ्यक्रम का सामुदायिक जीवन से स्पष्ट संबंध होना चाहिए। पाठ्यक्रम को इस जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं की व्याख्या करनी चाहिए और छात्रों को इसकी कुछ महत्वपूर्ण क्रियाओं के संपर्क में लाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि पाठ्यक्रम में उत्पादक कार्यों को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए, क्योंकि यह कार्य व्यवस्थित मानव जीवन का आधार है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।

3 अनुभवों की पूर्णता का सिद्धांत

शिक्षा की आधुनिक विचारधारा के अनुसार पाठ्यक्रम का अर्थ केवल सैद्धांतिक विषयों से नहीं है, जिन्हें परंपरागत ढंग से पढ़ाया जाता है। पाठ्यक्रम में उन सब अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है, जिनको विभिन्न क्रियाओं द्वारा प्राप्त करता है। ये क्रियाएँ — विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशॉप, खेल के मैदान तथा शिक्षकों और छात्रों के अगणित औपचारिक संपर्कों में चालू रहती है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

CLASSMATE
Date :
Page :

महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा

→ संपूर्ण शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प अथवा उद्योग पर आधारित हो।

→ शिल्प का चुनाव बच्चों की योग्यता और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के आधार पर किया जाए।

→ शिल्पों की शिक्षा इस प्रकार दी जाए कि उससे बच्चे जीविकोपार्जन कर सकें।

→ शिल्पों की शिक्षा में आर्थिक महत्व के साथ-साथ उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को स्थान दिया जाए।

बेसिक शिक्षा के सिद्धांत

1. शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क बनाने का सिद्धांत।
2. शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाने का सिद्धांत।
3. शिक्षा को जीवन से जोड़ने का सिद्धांत।
4. शिक्षा को हस्तकौशल पर केंद्रित करने का सिद्धांत।

बेसिक शिक्षा के उद्देश्य

1. सर्वोदय समाज की स्थापना
2. सांस्कृतिक विकास
3. व्यावसायिक विकास
4. नागरिकता का विकास
5. आध्यात्मिक विकास

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

classmate
Date :
Page :

बेसिक शिक्षा की पाठ्यचर्या

1 हस्तकौशल एवं उद्योग

2 मातृभाषा, व्यवहारिक गणित

3 सामाजिक विषय, सामान्य विज्ञान

4 संगीत, चित्रकला

महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार

गाँधीजी शिक्षा को मनुष्य का जन्म-अधिकार मानते थे और इसे मनुष्य के किसी भी प्रकार के विकास के लिए बहुत आवश्यक मानते थे।

शिक्षा अवधारणा
गाँधीजी ने केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं माना। उन्होंने कहा —

1 "साक्षरता शिक्षा का अंत नहीं है और न ही शुरूआत है। यह केवल ऐसे साधनों में से एक है जिससे पुरूष और महिलाएं शिक्षित हो सकते हैं।"

2 "शिक्षा से मेरा मतलब है कि बच्चे और मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना।"

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

classmate
Date
Page

शिक्षा का उद्देश्य

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक और बौद्धिक विकास
3. व्यक्तिगत और सामाजिक विकास
4. सांस्कृतिक विकास
5. नैतिक और चरित्र विकास
6. व्यावसायिक विकास
7. आध्यात्मिक विकास

शिक्षा का पाठ्यक्रम

1. मातृभाषा
2. व्यावहारिक गणित
3. सामाजिक विषय
4. सामान्य विज्ञान
5. संगीत
6. कला
7. स्वच्छता
8. नैतिक शिक्षा

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNIT-1

मापन, आकलन तथा मूल्यांकन

मापन का अर्थ एवं परिभाषाएँ

सामान्यतः किसी वस्तु के भार, लंबाई और आयतन को निश्चित इकाई अंकों में मापने और प्रकट करने की क्रिया को मापन कहते हैं; जैसे— मनुष्य के भार किग्रा में, कपड़े की लंबाई को मीटर में और दूध के आयतन को लीटर में प्रकट करना; परंतु वास्तव में मापन का क्षेत्र अति व्यापक होता। इसके क्षेत्र में किसी भी वस्तु प्राणी अथवा क्रिया की किसी भी विशेषता को शब्दों, चिह्नों अथवा इकाई अंकों में प्रकट करना आता है।

1 मापन किसी वस्तु अथवा क्रिया के भिन्न-भिन्न गुणों को चिह्न विशेषों में प्रकट करने की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा यथावस्तु अथवा क्रिया के यथागुणों को संक्षिप्त से संक्षिप्त रूप में प्रकट किया जाता है।

2 थॉर्नडाइक के अनुसार, "प्रत्येक वस्तु जो जरा भी सत्ता रखती है, किसी-न-किसी परिमाण में सत्ता रखती है;" और कोई भी मापन को परिभाषित करते हुए स्टीवेन्स ने लिखा है, "मापन किन्हीं निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।"

3 कैंपबेल के अनुसार, "नियमों के अनुसार वस्तुओं या घटनाओं को अंकों या संख्याओं में व्यक्त करना मापन है।"

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

4 मापन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी वस्तु, प्राणी अथवा क्रिया की किसी विशेषता को निश्चित मानदण्डों के आधार पर देखा-परखा और मापा जाता है और उसे मानक शब्दों, चिह्नों अथवा निश्चित इकाई अंकों में प्रकट किया जाता है।

मूल्यांकन का अर्थ

मूल्यांकन एक व्यापक एवं उद्देश्य-केन्द्रित प्रक्रिया है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका सर्वप्रमुख कार्य, शिक्षा को उद्देश्य-केन्द्रित बनाना है। इस प्रक्रिया के आधार पर व्यक्ति सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसे व्यक्ति के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करने वाली एक सुव्यवस्थित प्रणाली के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मूल्यांकन की परिभाषाएँ

मूल्यांकन को अनेक शिक्षाविदों ने अपनी आवश्यकता के अनुसार परिभाषाएँ निर्मित की है। इनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्न प्रकार है—

1 मैकलीन के शब्दों में, "मूल्यांकन शब्द को, 'मैं इसे पसंद करता हूँ' अथवा 'मैं इसे नापसंद करता हूँ' इन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त किया जाने लगा है। यह किसी भी व्यक्ति के द्वारा किन्हीं कार्यक्रमों, क्रियाओं, प्रक्रियाओं के दौरान प्राप्त अनुभवों के प्रतिक्रिया स्वरूप एक संवेगात्मक उद्गार है।"

"The term evaluation has come to mean 'I like it or I dislike it'—expressions of emotional reaction to programmes, process, activities, whatever one has experienced or is experiencing."

UNITEDSECULARSOCIETY

Scanned with CamScanner

2 गुडरिच एवं क्लाजमेयर के अनुसार, "शिक्षा में मूल्यांकन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा यह निर्णय किया जाता है कि किसी वस्तु की मापित सीमा और परिमाण किसी मापदंड के आधार पर स्वीकार्य अथवा वांछनीय है अथवा नहीं।"

"Evaluation in education is the process of judging whether the condition quantity or extent of something measured is acceptable in terms of some criterion."

3 क्विलेन तथा हन्ना के अनुसार, "विद्यालय के द्वारा हुए बालक के व्यवहार परिवर्तन के विषय में साक्ष्यों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।"

"Evaluation is the process of gathering and interpreting evidences on changes in the behaviour of the students as the progress through school."

4 रेमर्स एवं गेज के अनुसार, "मूल्यांकन के अंदर व्यक्ति या समाज अथवा दोनों की दृष्टि में जो उत्तम है, अथवा वांछनीय है, उसको मानकर चला जाता है।"

"Evaluation assumes a purpose or an idea of what is good or desirable from the stand point of the individual or society or both."

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

मापन एवं मूल्यांकन में अंतर

मापन

1 मापन के आधार पर भविष्यवाणी सार्थकता के साथ नहीं की जा सकती है।

2 मापन का कोई निश्चित समय होता है।

3 मापन का कार्य साक्ष्यों को एकत्रित करना है।

4 मापन एक साधन है।

5 मापन पाठ्य-वस्तु पर आधारित है।

6 मापन के बिना मूल्यांकन का कार्य वैज्ञानिक नहीं हो सकता है।

मूल्यांकन

1. मूल्यांकन में भविष्यवाणी सार्थकता के साथ कर सकते हैं, क्योंकि इससे उसके समस्त पहलुओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है।

2 मूल्यांकन निरंतर चलता है।

3 मूल्यांकन का कार्य लक्ष्यों के निष्कर्ष निकालना है।

4 मूल्यांकन एक साध्य है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Classmate
Date:
Page:

5. मूल्यांकन उद्देश्य पर आधारित होता है।

6 मूल्यांकन मापन का शैक्षिक लाभ मूल्यांकन के द्वारा ही संभव है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

1 E-503

आचार नीति

मानव स्वयं भी पर्यावरण का एक अंग है, अतः मानव के समस्त क्रियाकलाप, विभिन्न परिस्थितियों में उसकी भूमिका तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए उसके द्वारा किए गए प्रयास सभी का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगत होता है। —

A धर्म और प्रर्यावरण

B अर्थ व्यवस्था और पर्यावरण

C राजनीति और पर्यावरण

D संस्कृति और पर्यावरण

A धर्म और पर्यावरण

1 हिन्दू धर्म

→ विश्व की कुल आबादी के लगभग 13% व्यक्ति हिन्दू धर्म के अनुयायी है। इनके सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद और उपनिषद है।
~~विरासत में~~ इनमें जगह-जगह प्रकृति और प्रकृति से विरासत में मिली सभी वस्तुओं का जीवन से गहरा जुड़ाव मिलता है। इन सभी को अत्यंत पवित्र मानकर लोग इनकी पूजा अर्चना करते है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

CLASSMATE
Date
Page

The water in the sky, the water of rivers and water in wells whose source is ocean, may all these sacred water protect me

इससे यह स्पष्ट है कि हिन्दु धर्म पर्यावरण के संरक्षण हेतु उसे विकृति से बचाने हेतु कितना जागरुक था और उसमें कितनी रुचि रखता था ?

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner